Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

नई कहानी आंदोलन और शैलेश मटियानी की कहानियाँ

राजीव कुमार झा
शोधार्थी, कोच बिहार पंचानन बर्मा यूनिवर्सिटी

सार

हिन्दी साहित्य में नई कहानी आंदोलन ने आधुनिकता, सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखकर कहानी लेखन में नए आयाम स्थापित किए। इस आंदोलन के प्रमुख कथाकारों में शैलेश मटियानी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी कहानियाँ सामाजिक हाशिये पर जी रहे लोगों के जीवन, उनकी पीड़ा, संघर्ष और संवेदनाओं को गहरी संवेदनशीलता के साथ उद्घाटित करती हैं। यह शोध आलेख नई कहानी आंदोलन के सैद्धांतिक आधार, इसकी विशेषताओं और शैलेश मटियानी की कहानियों के योगदान का विश्लेषण करता है। शैलेश मटियानी की कहानियों में सामाजिक यथार्थ, निम्न और निम्न-मध्यम वर्ग के चित्रण, आंचलिकता और मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही, उनके साहित्यिक योगदान को समकालीन और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया गया है। यह आलेख शैलेश मटियानी की कहानियों को नई कहानी आंदोलन के संदर्भ में विश्लेषित करते हुए उनके साहित्य की प्रासंगिकता और प्रभाव को रेखांकित करता है।

बीज-शब्द: नई कहानी, शैलेश मटियानी, हिन्दी कहानी, सामाजिक यथार्थ, आंचलिकता, निम्न वर्ग, मानवीय संवेदना, साहित्यिक योगदान।

परिचय

हिन्दी साहित्य में 1950 का दशक एक परिवर्तनकारी दौर था, जब नई कहानी आंदोलन ने साहित्य में यथार्थवादी और आधुनिक दृष्टिकोण को स्थापित किया। स्वतंत्रता के बाद भारत में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने साहित्य को नए विषयों और शैलियों की ओर प्रेरित किया। नई कहानी आंदोलन ने परंपरागत आदर्शवाद और रोमांटिकता को चुनौती देते हुए व्यक्तिगत और सामाजिक यथार्थ को केंद्र में रखा। इस आंदोलन के प्रमुख कथाकारों में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव और शैलेश मटियानी जैसे लेखकों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी कहानी को नई दिशा दी।

शैलेश मटियानी (14 अक्टूबर 1931 - 24 अप्रैल 2001) नई कहानी आंदोलन के उन कथाकारों में से थे, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के हाशिये पर जी रहे लोगों की आवाज को बुलंद किया। उनकी कहानियाँ न केवल सामाजिक यथार्थ को उजागर करती हैं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और संघर्षों को भी गहरी अंतर्दृष्टि के साथ प्रस्तुत करती हैं। मटियानी का साहित्यिक योगदान नई कहानी आंदोलन के मूल्यों को सशक्त रूप से प्रतिबिंबित करता है, जिसमें आंचलिकता, निम्न वर्ग की पीड़ा और सामाजिक चेतना प्रमुख हैं। इस शोध

आलेख में नई कहानी आंदोलन के सैद्धांतिक आधारों को समझने के साथ-साथ शैलेश मटियानी की कहानियों का विश्लेषण किया गया है , ताकि उनके साहित्य की प्रासंगिकता और योगदान को स्पष्ट किया जा सके।

नई कहानी आंदोलन: सैद्धांतिक आधार और विशेषताएँ

नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य में 1950 के दशक में उभरा एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन था, जिसने कहानी लेखन की परंपरागत शैली और विषयवस्तु को चुनौती दी। इस आंदोलन के प्रमुख लेखकों में कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा और मन्नू भंडारी जैसे नाम शामिल हैं। नई कहानी ने मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं, व्यक्तिगत संबंधों की टूटन और सामाजिक बदलावों को केंद्र में रखा। यह आंदोलन प्रेमचंद युग की आदर्शवादी और सामाजिक सुधारवादी कहानियों से हटकर यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए जाना जाता है। इस लेख में नई कहानी आंदोलन की विशेषताओं, योगदान और कुछ आलोचनात्मक पहलुओं पर विचार किया जाएगा।

नई कहानी आंदोलन की सबसे प्रमुख विशेषता थी इसका यथार्थवादी दृष्टिकोण। लेखकों ने सामाजिक और आर्थिक बदलावों के बीच मध्यमवर्गीय जीवन की विडंबनाओं को उजागर किया। उदाहरण के लिए, मोहन राकेश की कहानी "मिस पाल" और कमलेश्वर की "राजा निरबंसिया" में शहरी जीवन की अकेलापन और असुरक्षा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया। इस आंदोलन ने व्यक्तिगत संवेदनाओं और मनोवैज्ञानिक गहराई को भी महत्त्व दिया, जो पहले की कहानियों में कम देखने को मिलता था। निर्मल वर्मा की कहानियाँ, जैसे "परिंदे", मानवीय संबंधों की नाजुकता और अस्तित्ववादी प्रश्नों को उभारती हैं।

नई कहानी ने शिल्प और भाषा के स्तर पर भी नवाचार किए। लेखकों ने पारंपरिक कथानक-केंद्रित शैली को छोड़कर प्रतीकात्मकता, अंतर्धारा (stream of consciousness) और संवाद-प्रधान शैली को अपनाया। भाषा को अधिक सहज, बोलचाल की और संवेदनशील बनाया गया, जो पाठकों को पात्रों के करीब लाती थी। यह आंदोलन समकालीन समाज की नब्ज को पकड़ने में सफल रहा, विशेषकर स्वतंत्रता के बाद के भारत में उभरते मध्यमवर्ग और शहरीकरण की चुनौतियों को दर्शाने में।

हालाँकि, नई कहानी आंदोलन की कुछ सीमाएँ भी थीं। आलोचकों का मानना है कि यह आंदोलन मुख्य रूप से मध्यमवर्गीय संवेदनाओं तक सीमित रहा और ग्रामीण भारत या निम्नवर्गीय जीवन को पर्याप्त स्थान नहीं दे सका। प्रेमचंद की कहानियों में जो सामाजिक सुधार और व्यापक दृष्टिकोण था, वह नई कहानी में कई बार व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के सामने कमजोर पड़ता दिखाई देता। इसके अतिरिक्त, कुछ आलोचकों ने इसे अत्यधिक आत्मकेंद्रित और निराशावादी होने का आरोप लगाया। कहानियों में अक्सर जीवन की निरर्थकता और हताशा का चित्रण प्रमुख रहा, जिससे सकारात्मक विकल्पों की कमी महसूस होती थी।

नई कहानी आंदोलन ने हिंदी कहानी को नई दिशा और गहराई प्रदान की। इसने आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने और व्यक्त करने का साहस दिखाया। हालाँकि इसकी कुछ सीमाएँ थीं, फिर भी इसका प्रभाव हिंदी साहित्य पर अमिट है। यह आंदोलन न केवल अपने समय की सच्चाई को उजागर करता है, बल्कि आज भी समकालीन लेखन के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

शैलेश मटियानी का जीवन और साहित्यिक यात्रा

शैलेश मटियानी का जन्म 14 अक्टूबर 1931 को उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के बाड़ेछीना गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम रमेशचंद्र सिंह मटियानी था। बारह वर्ष की आयु में उनके माता-पिता का देहांत हो गया, जिसके कारण उनकी पढ़ाई में व्यवधान आया। उन्होंने बूचड़खाने और जुए की नाल उघाड़ने जैसे कठिन कार्य किए। फिर भी, उन्होंने 17 वर्ष की आयु में पढ़ाई फिर से शुरू की और हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। रोजगार की तलाश में वे 1951 में दिल्ली आए और बाद में इलाहाबाद, मुजफ्फरनगर और बंबई जैसे शहरों में भटके। 1956 में उन्हें बंबई के श्रीकृष्ण पुरी हाउस में काम मिला, जहाँ उन्होंने लेखन जारी रखा।

शैलेश मटियानी की साहित्यिक यात्रा 1950 में शुरू हुई, जब उनकी पहली कविता "शिथिल है साधना मेरी" और कहानियाँ "रंगमहल" और "अमर कहानी" पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। उनका पहला कहानी संग्रह "मेरी तैंतीस कहानियाँ" 1961 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने लगभग 20 से अधिक कहानी संग्रह, 25 उपन्यास, 10 वैचारिक लेख संग्रह और कई बाल साहित्य की पुस्तकें लिखीं। उनकी प्रमुख कहानियों में "चील", "अर्धांगिनी", "महाभोज", "प्यास और पत्थर", "डब्बू मलंग", और "रहमतुल्ला" शामिल हैं। उनके उपन्यासों में "बोरीवली से बोरीबंदर" और "मुठभेड़" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

शैलेश मटियानी की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना

शैलेश मटियानी हिंदी साहित्य के उन कथाकारों में से एक हैं, जिन्होंने नई कहानी आंदोलन के दौर में अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के हाशिए पर जी रहे लोगों की जिंदगी को मार्मिकता, यथार्थवाद और गहरी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया। उनकी कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताओं, गरीबी, शोषण, और मानवीय संवेदनाओं को उजागर करती हैं। मटियानी का लेखन समाज का एक ऐसा आलोचनात्मक दर्पण है, जो निम्न और मध्यम वर्ग के जीवन की त्रासदियों, उनकी आकांक्षाओं और मजबूरियों को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाएँ कथ्य, शिल्प और संवेदना के अनूठे संगम के कारण हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती हैं। इस आलेख में उनकी कहानियों के सामाजिक चित्रण, यथार्थवादी दृष्टिकोण और मानवीय मूल्यों पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

सामाजिक यथार्थ का चित्रण

शैलेश मटियानी की कहानियाँ समाज के उपेक्षित वर्गों जैसे मजदूर, भिखारी, छोटे कर्मचारी, और ग्रामीण जनता के जीवन को केंद्र में रखती हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ, जैसे महाभोज, चील, अर्धांगिनी, डब्बू मलंग, रहमतुल्ला, दो दुखों का एक सुख, और प्यास और पत्थर, सामाजिक असमानता, शोषण, और मानवीय पीड़ा के यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनकी सबसे चर्चित रचना महाभोज सामाजिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार का प्रतीक है। इस कहानी में मटियानी ने सत्ता, धन और शक्ति के दुरुपयोग को उजागर करते हुए दिखाया कि कैसे समाज का कमजोर वर्ग इनके दबाव में और अधिक पिसता है। यह कहानी न केवल सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती है, बल्कि पाठक को सामाजिक संरचना की विसंगतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित भी करती है। जुलूस' कहानी में राजनेता और पुलिस मैं फैले भ्रष्टाचार को उकेरा गया है। राजनीति का सामाजिक

रूप इस में देखने को मिलता है,लोग जब यह समझ पाते हैं कि जिस सफ़ेद कमीज़ को पहन कर नेता आने वाले कल में करने वाले कामों का जिक्र करते हैं उसका प्रतिफल क्या है? 'जुलूस ' कहानी से यह अंश इस संदर्भ में प्रस्तुत है "आज कल के नेताओं का मुख्य पेशा क्रिमिनल्स की जमानतें कराना बन गया रचना और निर्माण की आँधी-अमिताभ बच्चन, राजीव गाँधी! का नारा लगाने वालों में हरामखोर सबसे आगे पाये जायेंगे।" पैसे वालों के सात खून माफ हैं, भइया, मगर एस. पी. ने ये चन्द घण्टों की नौटंकी अच्छी खड़ी कर दी। इतना दाँव लगाने के जुर्म में तो खुद पुलिस कप्तान को जुआ-ऐक्ट में धर लिया जाना चाहिये।" (भाग-4, पृ-63)

नेता रंगे सियार है, वह समाज की स्थिति से अवगत रहते हैं और हमें हमारे वास्तविक रंग से अवगत करा कर उसमें खुशियों के रंगों को भरने का दावा करते हैं। भोली भाली जनता जो सदा से ठगी जाती रही है, वह फिर नए झांसे में आ जाती है।

शैलेश मटियानी की कहानियों में उत्तराखंड के कुमाऊँ अंचल का ग्रामीण और शहरी जीवन विशेष रूप से उभरकर सामने आता है। उनकी रचनाओं में पर्वतीय क्षेत्रों की आर्थिक तंगी, सामाजिक रूढ़ियाँ, और वहाँ के लोगों के संघर्ष का जीवंत चित्रण मिलता है। उदाहरण के लिए, दो दुखों का एक सुख में भिखारियों के बीच प्रेम और मानवीयता की भावना को दर्शाया गया है। यह कहानी यह दर्शाती है कि विपरीत परिस्थितियों में भी मानवता जीवित रहती है। इसी तरह, रहमतुल्ला में एक साधारण व्यक्ति की संवेदनशीलता और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को उभारा गया है। मटियानी की कहानियाँ सामाजिक मुद्दों जैसे गरीबी, जातिवाद, और शोषण को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि इनके प्रति पाठक में संवेदना और जागरूकता भी जगाती हैं।

यथार्थवादी दृष्टिकोण और व्यक्तिगत अनुभव

मटियानी का लेखन उनके व्यक्तिगत जीवन के कठिन अनुभवों से गहराई से प्रभावित था। बारह वर्ष की उम्र में माता-पिता का निधन, बूचड़खाने में काम करने जैसी विपत्तियाँ, और आर्थिक तंगी ने उनके लेखन को एक यथार्थवादी और संवेदनशील दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके पात्र और कथानक काल्पनिक नहीं, बल्कि उनके आसपास के समाज और उनके स्वयं के अनुभवों से प्रेरित हैं। उनकी कहानियाँ समाज के उन लोगों की आवाज बनती हैं, जो सामान्यतः साहित्य में उपेक्षित रहते हैं। मटियानी ने अपने लेखन में सामाजिक यथार्थ को इस तरह प्रस्तुत किया कि वह पाठक के हृदय को छू लेता है। उनकी कहानियों में न तो अतिशयोक्ति है और न ही अनावश्यक भावुकता; बल्कि एक सटीक और संतुलित चित्रण है, जो समाज की सच्चाई को उजागर करता है। मटियानी ने अपनी संघर्ष यात्रा गांव से शुरू की थी, परन्तु उस पर सबसे अधिक मार शहर की ही रही है। कोई भी व्यक्ति जब गांव छोड़कर शहर की ओर जाता है, तो अपने मर्जी से नहीं जाता है। कुछ मजबूरी, कुछ आशाएं कुछ इच्छाएं रहती हैं। अपने आने वाले कल को बेहतर करने के लिए वह मात्र एक विकल्प के तौर पर शहर को चुनता है, अगर उसकी सारी इच्छाएं गांव में ही पूरी हो जाती तो वह शहर का रास्ता कभी नहीं चुनता। शहर अपने तरफ आने वाले सभी परिंदों का स्वागत एक हार से नहीं करती है, बल्कि कई परिंदों को केवल कांटे नसीब होते हैं। शहर यानि मुंबई से शहर को माया नगरी कहते हैं यहां हर कोई सपने लेकर आता है। लेकिन जरूरी नहीं कि सबके सपने सच हो। कुछ लोग इन्हीं महलों के बीच छिपे तहखाने में अपना जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

मटियानी जी जब शहर गए तब वह किसी महल में नहीं रहे वह उठाईगीरों,मजदूरों, चोर , बदमाशों के बीच रहें और ये जानने की कोशिश करते रहे कि कोई कैसे बदमाश और चोर बनता है। 'उठाईगीर' कहानी में गफूंर मियां कहते हैं," पहले पहल जब शहर आए थे रिक्शा ही चलाते थे, मगर एक बार 'इक्सीडेंट' जो हुआ तो भूखों मरने लगे। तभी कीडगंज वाले रामदास ने पनाह दी थी, उसी ने हाथ-सफाई की अदाकारी भी दिखायी...।" (भाग -3, पृ- 337)

उनकी भाषा सरल, सहज और भावप्रवण है, जो पाठक को कहानी के परिवेश और पात्रों के साथ सहज ही जोड़ देती है। मटियानी की कहानियों में स्थानीय बोलचाल और कुमाऊँनी संस्कृति की झलक भी मिलती है, जो उनकी रचनाओं को और अधिक प्रामाणिक बनाती है। उनकी शैली में एक ऐसी सादगी है, जो गहरे दार्शनिक और सामाजिक विचारों को भी सामान्य पाठक तक आसानी से पहुँचाती है।

मानवीय संवेदना और मूल्य

शैलेश मटियानी की कहानियाँ केवल सामाजिक समस्याओं का चित्रण ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय संवेदना और मूल्यों को भी रेखांकित करती हैं। उनकी रचनाओं में मानवता, करुणा, और संघर्ष की भावना बार-बार उभरती है। 'प्यास और पत्थर' जैसी कहानी में मानवीय आकांक्षाओं और सामाजिक बंधनों के बीच के द्वंद्व को दर्शाया गया है। उनकी कहानियों के पात्र अपनी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जीवन के प्रति आशा और गरिमा बनाए रखते हैं। मटियानी का लेखन यह विश्वास दिलाता है कि समाज में भले ही कितनी भी विषमताएँ हों, मानवीय संवेदना और एकजुटता इनका सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। संवेदना किसी भी कहानी की मूल बिंदु होती है, हर कथाकार हाशिए पर धकेल दिये गए लोगों पर कुछ लिखता है, तो वह चाहता है पाठक वर्ग इससे कुछ सीख ले और समाज की स्थिति बदले। शैलेश मटियानी ने भी अपनी कहानियों में इस बात का मर्म रखा है की हाशिए पर आए लोग समाज की मुख्य धारा से जुड़ सके। जो लोग किसी कारणवश समाज से विमुख होकर चल रहे हैं उन्हें समाज के बीच जोड़ जाए। उनकी कहानियों में हमेशा एक सुधार नीति का प्रयास है वह अपने हर पात्र में चाहे वह खल हो उन्हें समाज में वापस लाने का प्रयास करवाते हैं। उनकी कहानी 'उठाईगीर ' में गफूंर मियां कहते हैं "भोले तेरा जी कसकता हो, तो तू लौट जा। चोरी-जारी आधे मन की फलती नहीं।" (भाग -3 पृ-338)

साहित्य में योगदान

शैलेश मटियानी का साहित्य हिंदी कहानी को एक नई दिशा देने वाला रहा है। उनकी रचनाएँ नई कहानी आंदोलन की उस धारा का हिस्सा हैं, जो सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना को केंद्र में रखती है। उनकी कहानियों ने समाज के दबे-कुचले वर्गों को न केवल साहित्य में स्थान दिया, बल्कि उनके प्रति समाज की सोच को भी प्रभावित किया। उनकी संवेदनशीलता और यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण उन्हें 'हिंदी का गोर्की ' और 'चेखव' जैसे उपनामों से नवाज़ा गया।

नई कहानी आंदोलन के संदर्भ में शैलेश मटियानी की प्रासंगिकता

नई कहानी आंदोलन ने हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद और सामाजिक चेतना को स्थापित किया। शैलेश मटियानी इस आंदोलन के सिद्धांतों को अपनी कहानियों में न केवल अपनाते हैं, बल्कि उन्हें और समृद्ध करते हैं। उनकी कहानियाँ नई कहानी के मूल्यों यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक गहराई, और सामाजिक चेतना को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती हैं। मटियानी की कहानियाँ समकालीन सामाजिक समस्याओं को उठाने के साथ-साथ कालजयी भी हैं, क्योंकि वे मानवीय संवेदनाओं और संघर्षों को चित्रित करती हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।मटियानी का लेखन प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाता है, लेकिन उनकी शैली और दृष्टिकोण आधुनिक और यथार्थवादी है। राजेंद्र यादव ने उन्हें "रेणु से पहले का और बड़ा आंचलिक कथाकार" कहा था, जो उनकी साहित्यिक महत्ता को रेखांकित करता है। उनकी कहानियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए भी प्रेरणादायक हैं।

निष्कर्ष

शैलेश मटियानी की कहानियाँ नई कहानी आंदोलन की आत्मा को प्रतिबिंबित करती हैं। उनकी रचनाएँ सामाजिक यथार्थ, आंचलिकता और मानवीय संवेदनाओं का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती हैं। मटियानी ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के हाशिये पर जी रहे लोगों की आवाज को बुलंद किया और सामाजिक चेतना को प्रोत्साहित किया। उनकी कहानियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक हैं। मटियानी का साहित्य आज भी पाठकों को प्रेरित करता है और हिन्दी साहित्य में उनकी स्थिति को और सुदृढ़ करता है। उनकी कहानियाँ नई कहानी आंदोलन के मूल्यों को जीवंत करती हैं और समकालीन साहित्य में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रखती हैं। उनके साहित्य पर शोध और अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों को समझने के लिए भी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियां (पांच खंड), शैलेश मटियानी, प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008.
2. जन कथाकार शैलेश मटियानी, भारत सरकार, सुचना प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली,1992.
3. शैलेश मटियानी का कथा साहित्य, डॉ.सुरेश रस्तोगी, अभिलेख प्रकाशन, बरेली,2012.
4. लेखक की हसियत से, शैलेश मटियानी, विकल्प प्रकाशन,इलाहबाद,1964.
5. जनता और साहित्य,शैलेश मटियानी,परिमल प्रकाशन,इलाहबाद ,1976
6. मटियानी - मेरी नज़र में : अपने पत्रों में , दामोदर दत्त दीक्षित ,विभोर प्रकाशन ,इलाहाबाद ,2002
7. नयी कहानी: संदर्भ और प्रकृति,देवी शंकर अवस्थी,राजकमल प्रकाशन,1973.
8. हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश,सुमित प्रकाशन,इलाहाबाद,2016
9. कहानी के नए प्रतिमान , कृष्ण कुमार ,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,2012
10. सिंह, नामवर, कहानी :नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1982